CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१ त्याज्या न भव्येन : स्वर्ग मोक्षाभि लाषिणा ॥ ओं
ह्रीं परब्रह्मणो उत्तम क्षमा धर्मांगाय नमः ॥ उत्तम
मधमद्दव्य अज्जसच्च उ ॥ पुणसउच्च संयमद्द
अज्जसच्च उ ॥ पुसे। णा सऊच्च संयमस्तु तउ ॥
चउ विआ किंचन भव भय वंच्चनु वंभचेरु धम्म
जि अखक उ ॥ अर्थ ॥ उत्तम क्षमा ॥ १ ॥ मार्दव ॥ १
आर्जव ॥ १ ॥ सत्य ॥ १ ॥ शौच ॥ १ ॥ संयम ॥ १ ॥ सुतप
१ ॥ त्याग ॥ १ ॥ आकिंचन्य ॥ १ ॥ ब्रह्मचर्य ॥ अर्थ
इसभांत दस लाक्षनक न्यारे न्यारे ॥ अपने दस ल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain, Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥श्रीजिनायनमः॥ मूल॥ येन केनापि दुष्टेन पीडिते नापि कुत्रचित्॥ क्षमा त्याज्या न भव्येन: स्वर्ग मोक्षाभिलाषिणा॥ अर्थ॥ जो काहु दुष्ट कर पीडे त हुवो संतो स्वर्ग मोक्ष को वांछिक भव्य जीवक र क्षमा है सो नहीं छोड़ना योग्य है॥ मूल॥ ओंह्रीं परब्रह्मरो उत्तिम क्षमा धर्मांगाय नमः॥ अर्घ॥ ऐसे न महान उत्तम क्षमा धर्मांग के निमित्त हमा रो नमस्कार है सो होहु॥ मूल॥ उत्तमम धयेन केनापि दुष्टेन पीडिते नापि कुत्रचित्॥ क्षमा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२ गाइ दुहाइ॥ अर्थ॥ उत्तम क्षमा है सो गुण समूह
की सहकारी है॥ उत्तम क्षमा के समीप गुणों के स
मूह आय रहत है॥ मूल॥ उत्तम खम बुह यणे
चिंता मणि॥ अर्थ॥ उत्तम क्षमा है सो पंडित पु
रुषो को चिन्ता मन रत्न है॥ मूल॥ उत्तम खम सं
पज्जइ थिरमन॥ अर्थ॥ उत्तम क्षमा है सो मन
थिर होय है॥ मूल॥ उत्तम खम मह णिज्ज सयं
लजन॥ अर्थ॥ उत्तम क्षमा है सो सर्व सज्जन
समूह कर पूजनीक है॥ मूल॥ उत्तम खम मद्द

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२ क्षमा को धरे ॥ दस प्रकार धर्म है ॥ सो संसार
को नाश करन हार है ॥ और सदा शास्वत है ॥
इस दस प्रकार धर्म विषे प्रथम क्षमारूप पर
म धर्म को लक्षण वा फल वा स्तवन वर्णन को
जे है ॥ मूल ॥ उत्तम खय तिल्लो यहु सारी ॥ अर्थ ॥
उत्तम क्षमा धर्म है सो तीन लोक विषे सार है
॥ मूल ॥ उत्तम खम जं जम्मं दुहि नारी ॥ अ
र्थ ॥ पेर उत्तम क्षमा धर्म है सो संसार समुद्र
को उतार है पार करे है ॥ मूल ॥ उत्तम खिंवंडु म

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३ हिये॥मूल॥ जहां अममकहिनउकसिज्जइ ॥अर्थ॥ जह असमर्थ गरीव अपने आधीन जीवसेती कढिये नहीं॥मूल॥ सोउ जही आको सउ वाहिन सहिज्जइ॥अर्थ॥ जहां आकोश वचन दुर्वचन खोटे वचन सहिये॥ जिहि परदो सणु जणु भासिज्जई॥अर्थ॥ जहां निज आ त्मीकदर्शन ज्ञानचेतनाके चिंतन विषे मन ध रिये॥मूल॥ तहि उत्तम जनेन कहिज्जइ॥अर्थ॥ तहां उत्तम क्षमा जनेश्वर देवन कर कहिये है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तमहां मारा ॥ अर्थ ॥ उत्तम क्षमा सो मिथ्या
त्व अंधकार दूर करवे को महां उदोतमान मार्त
समान है ॥ जिस उत्तम क्षमा को ऐसो बड़ाई है सु
ति महिमा करत हों ॥ सो उत्तम क्षमा कैसे उपजे
है ॥ शिष्य ऐसो प्रश्न करो ताको उत्तर आचार्य गुरु
महाराज आगे कहे हैं ॥ मूल ॥ जिस असमर्थ
है दोस खमि जई ॥ अर्थ ॥ जहां असमर्थ
जीवों सेती कोई दोष तकसीर भई ताकी क्षमा
कीजे ॥ सांत परनाम राखिये सो उत्तम क्षमा क

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४ गारीत अनंता ऋषि प्रधान ऋषीं धीश्वर
हैं ते सिद्धपदको पाम होइते ॥मूल॥ श्लोक॥
मृदुत्वं सर्व भूतेषु कार्य जीवेन सर्वदा॥ का
ठिण्यं त्यज्यते नित्यं धर्म बुधि विजानता
॥१॥ ॐ ह्रीं परब्रह्मणो उत्तम मार्दव धर्मांगा
यनमः॥ अर्थ॥ धर्म बुद्धि के जाननहारे भव्य
जीव कर सर्व जीवा विषय कोमल परनाम
है सो सर्व काल करने योग्य है॥ और कठोर
परनाम है सो नित्य ही छोड़ने योग्य है॥ ऐसे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ पत्तामूल॥ इय उत्तमखमजुय नरसुरखग
गुय केवल नानु लेंहे विथिरु॥ अर्थ॥ इस भांत
उत्तम क्षमाकर संयुक्त पुरुष है॥ सो मनुष्य देव
विद्याधरो कर स्तवनीयहु॥ उसंतो थिरी भ
त केवलज्ञान है ताहि प्राप्त होइ॥ मूल॥ कर:
हुइ सिद्धि निरंजन: भव दुह भंजन: अगणेथी
संघुंग मझि चिरु॥ अर्थ॥ संसार दु:ख को नास
करणा समर्थ कर्म कलंक कर रहित सिद्ध महरा
ज होइ है॥ और सही उत्तमा गुन के प्रभाव कर अ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५ गुन गन सारउ॥ अर्थ॥ गुणाके जे समूह तिन विषे
सारहै॥ मूल॥ तिस ह्व वउ संयम सुसहलु॥ अर्थ
तिस मार्दव धर्मकर सहित व्रत और संयमहैं
ते सफल है॥ मूल॥ मद्दव माणा कसाय विभंड
नु॥ अर्थ॥ मार्दव धर्म है सो मान कषाय को वि
शेष कर खंडन वालो है॥ पांचौ इंद्री और मन व
स होय है॥ मूल॥ माद्दव धर्म हि करुना वल्ली
॥ पसरइ चित महीहि नव वल्ली मार्दव धर्म क
र चित्त रूपी पृथ्वी विषै करुना मई नवीन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महान मार्दवरूप अंगहै ताके निमित्त हमारो धर्म
नमस्कार है सो होडु ॥ मूल ॥ मार्द्दव भव मद्द नु
॥ अर्थ ॥ मार्दव धर्म है सो संसार को मर्दनवा
लो है ॥ नास करने वालो है ॥ मूल ॥ मारा रोग्ं
दरगु ॥ अर्थ ॥ मानकषाय को अतिसय करना
श करने को समर्थ है ॥ मूल ॥ दयाधर्म्म मुल जि
विमलु ॥ अर्थ ॥ दयामूल को धर्म है और
विमल कहिये निर्मल है ॥ मूल ॥ सब्व हं हिय
पारउ ॥ अर्थ ॥ सर्व जीवों को हित कारी है ॥ मूल ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६

रोहइई ॥ अर्थ ॥ मार्दव धर्म कर मनुष्य समू
हको वैर भाव है सो दूर होइ है ॥ मूल ॥ माद्दवे
ण परिणाम विशुद्धी ॥ अर्थ ॥ मार्दव धर्म क
र परणामों की विशुद्धता होइ है ॥ क्रोध मा
न माया लोभ रूप कषाइ है ते मंद होइ हैं ॥ इ
सुको होहिं हैं ॥ जुह भावार्थ है ॥ मूल ॥ माद्
वेण विहुलोयहु सिद्धी ॥ अर्थ ॥ मार्दव धर्म
कर दोउ लोक सौं भव सुधो है ॥ इस भव प
र भव में मनो वांछित फल होइ है ॥ मूल ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वेलहैसो पेड़हैं फलहै ॥ मूल ॥ मार्दव जि
नवर भक्तियया सई ॥ अर्थ ॥ मार्दव धर्म है
सो श्री जिनवर देवकी भक्ति को प्रकाश क
रे है वडावे है हढावै है ॥ मूल ॥ मार्दव कुम
इ पे सरु णरासप ॥ अर्थ ॥ मार्दव धर्म कर
कुमत के विस्तार को अतिशय करना सुको
यहै ॥ मूल ॥ माद्दवेरा वहु विण उप वड्ढ इ
॥ अर्थ ॥ मार्दव धर्म कर वहुत विनय कर
प्रवर्त्ति होयहै ॥ मूलं ॥ माद्दवेन जनवैइ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७ कौ स्वरूप है सो प्रति भासे है जानिये है ॥ मूल ॥ मा
द्दव दोष अशेष निवारण ॥ अर्थ ॥ मार्दव धर्म है
सो सब धर्म को दूर करे है ॥ मूल ॥ मद्दव जनन स
मुद्दो तारउ ॥ अर्थ ॥ मार्दव धर्म है सो संसार समुद्र
को पार करे है ॥ मूल ॥ सम्यद्द सनु अंगु मद्द
व परनाम मुजि मुणद ॥ अर्थ ॥ भो भव्य जीव हो तु
म जो हो ते मार्दव धर्म रूप परनाम है ताहि सम्य
ग्दर्शन को अंग जांनो ॥ मूलं ॥ इय परगाग्र विचि
ती ॥ अर्थ ॥ इस भांति पूर्वोक्त अतिशय वान मार्द

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माद्दवेणादो वहुतउ मोहई ॥ अर्थ ॥ मार्द्दवध
र्म कर सहित वाह्य भ्यांतर दोइ प्रकार तप है
सो मो भे है ॥ मूल ॥ माद्दवेणा ति जउ जिन
रु मोहइ ॥ अर्थ ॥ मार्द्दव धर्म कर तीन जगत के
जीव हैं ते अतिशय कर मोहे हैं प्रीति करे हैं ।
मूल ॥ माद्दव जिनसामुनु जानिज्जइ ॥ अर्थ
मार्द्दव धर्म कर जिन धर्म जिन मत है सो
जानो जाइहै ॥ मूल ॥ अप्पां परिसरु भासि
ज्जइ ॥ अर्थ ॥ फेर मार्द्दव धर्म वा आपु को पो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है सो न कर्त्तव्या नहीं करनो ॥ मन्त्र ॥ ॐ ह्रीं परम भ
क्षरो उत्तम आर्यव धर्मांगाय नमः ॥ अर्घ ॥
ऐसे महान आर्यव धर्म रूप अंग के निमित्त
हमारो नमस्कार है सो होहु ॥ मूल ॥ धम्म हु
वरलरकणु अजव थिरु मनु ॥ अर्थ ॥ आर्ज
व धर्म है सो धर्म को श्रेष्ठ लक्षण है ॥ और
आर्यव धर्म कर मन है सो थिर होइहै ॥ मूल ॥
दुरिय विहं मरा सुहजणणु ॥ अर्थ ॥ फेर आ
र्जव धर्म है सो पाप को नास करन वालो है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व धर्म को स्वरूप वा फल है ताहि अपने विषे जानकर ॥ मूल ॥ मद्दव धम्म अमल्लु थुणहु ॥
अर्थ ॥ निर्मल मार्दव धर्म है ताहि स्तुति करो ॥
मूल ॥ आर्यात्वं क्रियते सम्यग्दृष्टबुद्धि या तिज्यते ॥ पापचिन्ता न कर्तव्या श्रावक धर्मविंतकै ॥ अर्थ ॥ धर्मचिंतकैः श्रावकैः ॥ कहिये धर्म के चिंतक श्रावक हैं तिनकर आर्यत्वं कहिये ऐसे करिये है ॥ दुष्टबुद्धि त्यक्त कहिये ॥ फेर दुष्टबुद्धि है सो सम्यक् त्यज्यते कहिये पापचिंता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पने चित्त विषैं चिंतिये ॥ मूल॥ तारिसु अन्नह
पुनु भासिज्जइ ॥ अर्थ॥ जैसो अपने चित्त विषैं
चिंतिये ॥ मूल॥ तारिसु अणह पुणु भासिज्ज
इ ॥ अर्थ॥ फेर तैसो ही औरां को कहिये ॥ मूल
किज्जई पुणु तारिसु ह संचणु ॥ अर्थ॥ फेर जै
सो ही कहिये तैसो ही शुभ पुण्य को संचय की
जिये ॥ मूल॥ तं अज्जउ गुणु मुनहु अवंचनु ॥
अर्थ॥ भो भव्य हो तुम तें ही आर्यव धर्म जा
नो कैसे कहिये ॥ आर्जव धर्म अवंचन कहि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

और सुख को उपजावे है॥ मूल॥ तंनमुजिकिज
इ॥ अर्थ॥ सो आर्जव धर्म इस प्रकार कीजें॥ मू
ल॥ तंपात्तिज्जइति॥ अर्थ॥ सआर्जव धर्म
को पालिये॥ मूल॥ तभसनज्जइ॥ अर्थ॥ फेर
आर्जव धर्म है तारि स्तू निये॥ मूल॥ स्वयजरा
गु॥ अर्थ॥ तातें संसार को नासु होइ॥ अथवा रे
सो अर्थ कीजें कैसो कहे॥ आर्यव धर्म नास करो
हो॥ संसार जा धर्मकर ऐसो है॥ अर्यव धर्म॥ मूल॥
जारिसुराय विचिंत्त चिंतजइ॥ अर्थ॥ जैसें अ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फलरहित है॥ अर्थ॥ अज्जव शिव पुर पंथहु
सच्चहु॥ अर्थ॥ आर्जव धर्म है सो मोक्ष धर्म को
साधक है॥ जिस आर्जव धर्म को बड़ाइ ऐसो करी
सो आर्जव धर्म कैसे उपजै है॥ शिष्य ऐसो प्रश्न
करो ताको उत्तर श्री गुरु कहे हैं॥ मूल॥ जिकु कु
डिल परणाम० चइज्जइ॥ अर्थ॥ जहां कुटिल
परनाम छोड़िये॥ मूल॥ तह अज्जव धम्मु जिं
सं पज्जइ॥ अर्थ॥ तहां आर्जव धर्म है सो उपजे
है॥ मूल॥ दंसरा नाराण संरूव अरवंडो॥ अर्थ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ये माया कषाय कर रहित है। दगाबाजी ठ
गई कर रहित है ॥ मूल॥ माया मनहु नो नीसा
रहु ॥ अर्थ॥ माया कुटिलाई रूप शल्य है
ताहि अपने मन तें निकासो दूर करो ॥ मूल
अजउ धम्मु चित्त बियारहु ॥ अर्थ॥ कुटि
लाई रहित पवित्र आर्यव धर्म है ताहि वि
चारो ॥ चिन्त बनओ ॥ मूल॥ वउतउ मा
या विसकुणकर ॥ अर्थ॥ व्रत और तप हैं
सो माया चारी दगाबाज पुरुष के निर्थक है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११ धम्मु इंलब्भइ॥ अर्थ॥ सोभी शुद्ध आत्मी
क परनाम आर्जव धर्म के प्रताप का पाइये है
॥मूल॥ अज्ज वेरा वई रिय मगु घुम्मइ ॥
अर्थ॥ आर्जवधर्म कर वैरीकोमन छोभ को मा
र्ग है सो होइ है। वैर भाव कर रहित होय है॥ धत्त
मूल॥ अज्ज उपरम पु उगय संकप्पउ॥ अर्थ
आर्जव है सो परमात्मा है॥ और दूर भए हैं सं
कल्प विकल्प जांल सरूप भाव जातें ऐसा है॥
मूल॥ विंमुति जिसासंउ सभउ॥ अर्थ॥ फेर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो दर्शन ज्ञान स्वरूप है और खंड रहित है ॥ मूल ॥ परम अतींद्रिय सुख करंडो ॥ अर्थ ॥ जो उत्कृष्ट अतींद्रिय निज आत्मीय सुख को करे है करंडो कहा पिटारो है ॥ मूल ॥ अप्पई आपहु भाव तरंडो ॥ अर्थ ॥ जो आप कर आप ही संसार समुद्र को तारे है ॥ मूल ॥ ए रि सूचे यन भाव भयं हो ॥ अर्थ ॥ ऐसो जो आत्मा को प्रचंड प्रबल कषाय रहित सुद्ध निज दर्शन ज्ञान सरूप परनाम है ॥ मूल ॥ सो परा अज्ञान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२ भव्य जीव है ताकर असत्य कहिये॥ असत्य
वचन है सो सर्वथा कहिये॥ सर्व प्रकार कर त्या
ज्यं कहिये छोड़ने योग्य है॥ अर्थ च पुनः फे
र कहिये पर निंदा कहिये है सो सर्वदा कहिये
सर्व काल विषे न कर्तव्या कहिये नहीं करनी॥
अपि कहिये निश्चयक॥ मूल॥ ॐ ह्रीं परब्रह्मणे
उत्तिम सत्य धर्मांगाय नमः॥ अर्थ॥ ऐसो महा उ
त्तिम सत्यं धर्मांग के निमित्त हमारो नमस्कार
है सो होहु॥ मूल॥ दयाधर्म हु कारन दोस निवा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आर्जव धर्म है सो कहे चिन्मूर्त है दर्शनज्ञान
की मूर्त है॥ और भयरहित है॥ मूल॥ तं णि
भाइज्जइ संसउहि ज्जइ या विज्जइ जो अच
लपउ॥ अर्थ॥ तिस आर्जव धर्म को ध्याइये॥
और संसार छांड़िये॥ फेर आर्जव धर्म के -
ध्यावनें अचल पद है॥ सदा सास्वतो है मु
क्तं पद है॥ मूल॥ श्लोक॥ असत्यं सर्वथा त्या
ज्यं दुष्ट वाक्यं च सर्वदा॥ परनिंदा न कर्तव्या
भवे नापि च सर्वदा॥ १॥ अर्थ॥ भव्ये न कं हिये

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२ गरुडु विधान ॥ अर्थ ॥ सत्य धर्म है सो रक्षी मंडल
विषैं गरुड़ विधान है ॥ मूल ॥ सच्चजि संसारसमुद्द
सउ ॥ अर्थ ॥ सत्य धर्म है सो संसार समुद्र के उतारवे
को याजवंध है पुल समान है ॥ मूल ॥ सच्चुजि भव्व है
मराणस्स्वर केहेउ ॥ अर्थ ॥ सत्य धर्म है सो भव्य जीवों
के मनको सुख कारण है ॥ मूल ॥ सच्चेन जिसो होइ
मणयज्जम्म ॥ अर्थ ॥ सत्य धर्म कर मनुष्य है सो सो
भे हैं ॥ मूल ॥ सच्चेणा पवितउ पुण्ण काम असत्य
धर्म करि पुण्य है सो प्रवर्त्ति होइ है ॥ मूल ॥ सच्चे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राग इहि भव परभव सुर कयरुस च्चु जिवयगु लु
उ भुवरा॥ अतुल्लउ। वोलिज्जइ। वीसास घरु॥ अर्थ॥
दयाधर्म को काररा दोषों को निवाररा दूर करन वालो
है॥ इस भव परभव विषे सुख को करन वालो है॥ तीन
लोक विषें जाके समान औरन हीं॥ और जो विश्वास
को घर प्रतीत को मंदिर ऐसी अनेक उपमा को धरे उत्कृ
ष्ट सत्य वचन है सो भव्य जीवां कर वोलिये हैं॥ मूल॥
सच्च जिसवंहं धम्मु पहारा ु॥ अर्थ॥ सत्य धर्म सो
सर्वधर्म विषें प्रधान है॥ मूल॥ सच्चु ज्ज महियलु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८ है सो यालिये है ॥मूल॥ जंखन फिढइ संसार
क्षत॥ अर्थ॥ जिनतीनों गुणके पालेतैं संसार
संबंधी पीड़ा होसो एक छनमें दूर होइ है॥घ
ता मूल॥ सच्चुसधर्म फलेन केवल नानल्म है
इजन॥ अर्थ॥ सत्यधर्मको फलकर भव्य सम
ह है सो केवलज्ञान है ताहि प्राप्त होइ है॥मूल॥
तं पालहि भोम द्रव्य॥ भराहुम॥ आलिंय उ
इछबधरा॥ अर्थ॥ भो भव्यजीवहो॥ ऐसो स
त्यधर्म है ताहि पालहु॥ और इस मनुष्य जन्म

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नस पल गुरा गरा सक्षंति ॥ अर्थ ॥ सत्य धर्म कर
सकल गुरा के समूह सोहे है ॥ एक है होय हैं सत्य
वादी पुरुष विषें आपये रहे हैं ॥ मूल ॥ सच्चे मति
य ससंवा वहंति ॥ अर्थ ॥ सत्य धर्म कर देव हैं ते
सेवा करें हैं ॥ मूल ॥ सच्चे न अनु व्वई महव्वया
पी ॥ सत्य धर्म कर असि ज्जई निविभास हित
रूप मर्यादा रूप वचन है सो भव्य जीवों कर नित्य
ही बोल ॥ मूल ॥ पंना विभासिज्जय परं इहापि
यास ॥ अर्थ ॥ परको अहित रूप अमर्याद गुस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५ अभंगो भिंगो गो उव उगा जुउं ॥ जरा मरण विनाश
नति जय पया सन झाइज्जइ ॥ अहि निसजु धउ ॥
अर्थ ॥ जो शौच धर्मांग भंग कर रहित है अखंड है ॥
फेर अंग सेती न्यारो है ॥ फेर उपयुक्त कर संयुक्त है ॥
जो जरा मरन के विनास कर समर्थ है ॥ और जो तीन
जगत विषे प्रकाश करने को समर्थ है ॥ ऐसो भवशा
स्वतो महान सौच धर्म है सो दिनरात विषे निरंतर
चिंतवन कीजिये ॥ मूल ॥ धम्म सउच्च होइ मन सुद्ध
॥ अर्थ ॥ ए मन की शुद्धता कर शौच धर्म है सो होइ है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषै झूठौ वचन है ताहि मत बोलो ॥ मूलश्लोक ॥
वाह्या भ्यंतरे स्यापि मनोवा ॥ काय शूद्धिभिः सु
चित्तेनसदाभाव्यंपापभीतैः ॥ सुश्रावकै ॥ अर्थ ॥
वाह्य अभ्यंतरकर और मनवचकायकी शुद्धता
करपापतैं डरपे श्रावक हैं तिनकर सर्व विषै भलो
चित्तकर पापरहित चित्तकर भावनो योग्य है ॥ मूल ॥
ॐ ह्रीं परम ब्रह्मणो उत्तिमसौच धर्मांगाय नमः ॥ अ
र्थ ॥ ऐसो महान शौच धर्मांगके निमित्त हमारो न
मस्कार है सो होउ ॥ मूलं ॥ सउव्वु जु धम्मंगा तेज़ि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन आगमके पट वेतैं शौचधर्म है सो होइहै ॥मू
ल॥ धम्मसउच्चसगुराअणुमरारो॥ अर्थ॥ गु
णवान पुरुषकी अनुमोदनां करतैं शौच धर्म है सो
होइहै॥ मूल॥ धम्मसउच्चसल्लकयवाये॥ अर्थ॥
माया मिथ्या निदानरूपतीनसल्य के त्याग कर
सौचधर्महै सो होइहै॥ मूल॥ धम्मसउच्चजु निम
लभार॥ अर्थ॥ निर्मल भाव होतसंते शौच धर्म है
सो होयहै॥ मूल॥ धम्मसउच्चकसाय अहावे॥ अर्थ॥
कषाइके अभावतें त्यागतैं शौच धर्म है सो होइहै

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ मूल ॥ धम्मस उच्च य वरा धरा रोद्धरा ॥ अर्थ ॥ व
चन धन को शूद्ध ताकर शौच धर्म है सो होइ है ॥ मूल ॥
धम्मस उच्च लोह वज्जंत उ ॥ अर्थ ॥ लोभ के त्याग
वंत पुरुष के सौच धर्म है सो होइ है ॥ मूल ॥ धम्मस
उच्च स्तव पाहि जंतउ ॥ सम्यक्त पश्चरणा आचर
णा रूप मार्ग चलन वाले भव्य जीवों के शौच धर्म
है सो होइ है ॥ मूल ॥ धम्मस उच्च मद पट निवारणा ॥
अर्थ ॥ आठ मद के त्याग ते शौच धर्म है सो होइ
है ॥ मूल ॥ धम्मस उच्च जिणायम भणाने ॥ अर्थ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७ ओवयपासेउ॥ अर्थ॥ मुनि महांराजो को कदाका
ल विषैभी जलनरूप शौच धर्म नहीं कह्यो है॥ घत्ता
मूल॥ भव मुनि वि आनि ओ धम्मु सउओ पालिअ
इ॥ एयगामिनि॥ अर्थ॥ संसारको अनित्य अथिर
जानकर भो भव्यहो एकाग्रमनकर शौच धर्म है सो
पालिये॥ कैसो कहे शौचधर्म॥ मूल॥ सुह मगासहा
यउ॥ अर्थ॥ शुभ मार्ग को सहाइहे॥ फेर कैसो कहे
॥ मूल॥ सिव पयदाइ॥ अर्थ॥ उमोक्ष पदकोदाई
कहे॥ मूल॥ अनुमचिंतहि किंम परिवारो॥ अर्थ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥मूल॥ धम्म स उञ्च नलिप्पइ पावे ॥अर्थ॥ पाप
रूपी लेप के बिगर लगवे तें शौच धर्म है सो होइ है
॥मूल॥ अहवा जिनवर पुज्ज विहारो ॥मूल॥ निम्म
ल फासु पजल कय पर हारो ॥अथवा॥अर्थ॥ और
प्रकार जिनेश्वर देव जू की पूजा विधान विषै निर्मल
प्रासूक नीर करि इया सहित होइ ॥ यत्न पूर्व स्थान
करे सो भी शौच धर्म कहिये है ॥मूल॥ तपै स उ जु
ग्रह छइं भासि उ ॥अर्थ॥ सो जह शौच धर्म ग्रहस्थों
को जिनेश्वर देव कहो है ॥मूल॥ रा वि मुनिवर कइं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८ एकेंद्री॥ तीनइंद्री॥ चौंद्री॥ पचेंद्री॥ जीवकोरक्ष
मारूप प्रारा संयमं॥ इमभांत॥ दोई प्रकारसंयमहै
कह्यो॥ मूल॥ पालनीयं सुचित्तेन भव्य जीवेन सर्वदा
॥ अर्थ॥ भव्यजीवेन कहिये॥ भव्यजीवहैं ताकर सु
चित्तेन कहिये॥ पुरायरूप चित्तकर पालनीय कहि
ये॥ पूर्वोक्त दोई प्रकारसंयम पालनो योग्य है॥ मूल
उंह्रीं परब्रह्मणे उत्तम संयम धर्मांगाय नमः॥ अर्थ
ऐसो महान संयम धर्मांगके निमित्त हमारो नमस्का
र है सो होहु॥ मूल॥ संयम जरा दुल्लहु॥ अर्थ॥ संय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भोभव्य जीवहो तुम जुहो सो शौच धर्म विना और
कब भी चिंतवन मत करो॥ क्षणमात्र भी परंतु शौच
धर्म है॥ सोई समय समय विषें चिंतवन करो ध्यान
स्मरण करो॥ श्लोक॥ संयम द्वि विधं लोके क
थितं मुनि पुंगवैः॥ पालनीयं स्वचित्तेन भव्य जीवे
न सर्वदा॥१॥ अर्थ॥ मुनि पुंगव जे काहिए॥ मुन प्रधा
न कर श्री जिनेश्वरदेव कर लोक काहिए॥ इस लोक
विषें संयम कहिये हैं॥ संयम है सो द्वि विधं कथितं
कहिये पांच इंद्री वसीकरण रूप इंद्री संयम और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पावे ॥ आ– नहीं पावे ॥ मूल ॥ संयम पंचेंद्रिय
मनदंडनेन ॥ अर्थ ॥ पांच इंद्री के दंड देकर वश क
रवेतें संयम है सो होइ है ॥ मूल ॥ संयम जिकसाइ
विहंडणेन ॥ अर्थ ॥ क्रोध मान माया लोभादिक
कषायों के विषंडनकर कषाइ के छोड़ देकर सं
यमधर्म है सो होइ है ॥ मूल ॥ संयम दुद्धर तंबच
रणेन ॥ अर्थ ॥ दुद्धुरित पश्चरणा के धारवेतें संय
मधर्म सो होइ है ॥ मूल ॥ संयंम उपवास विये भरो
न ॥ अर्थ ॥ उपवासों के बढ़ाइवेतें करवे तैं सो संयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महैसो मनुष्य को अतिदुर्लभ है ॥ मूल ॥ तं पाविवि
लहु जो छंडहु ॥ पुन मूढ मइ ॥ अर्थ ॥ ऐसे दुर्लभ सं
यम को पायकर जो मूर्ख बुद्धी जीव शीघ्र ही फेर छो
ड़ देय हैं मूल ॥ सो भमई ॥ भमावलिज्वर मरनावलो
॥ अर्थ ॥ सो जीव जरा और मरनी है ॥ पंक जा विषें
इसी भावोन् महान् पंड़ है तिन ही में भ्रमे है ॥ अनंत
भवों विषैं जन्म मरन करनों संतो चारों गत विषें भट
के है ॥ मूल ॥ किम पांवइ सइ पुनु सुगइ ॥ अर्थ ॥
संयम छोड़ने वालो जीव है सो सुगति है ताहि कां फेर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२० वोंकी रक्षाकर संयम धर्म है सो होइ है ॥ मूल ॥ संय
म सद्धु परिरक षेन ॥ अर्थ ॥ जैनशास्त्र अर्थ प
रीक्षाकर संयम धर्म है सो होइ है ॥ मूल ॥ संयम तन
जोयन यत्तरोन ॥ अर्थ ॥ योगो के कृषि करवे कर का
य योग के वस होवे कर संयम धर्म है ॥ मूल ॥ संय
म बुह गमन चयं तरण ॥ अर्थ ॥ बहुत गमन के त्या
ग कर संयम धर्म है सो होइ है ॥ मूल ॥ संयम अनुकं
प कुरां तरुन ॥ अर्थ ॥ जीवों की अनुकंपा दयाकर
संयम धर्म है सो होइ है ॥ मूल ॥ संयम पोसइ वंस तु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धर्म होइ है ॥ मूल ॥ संयम मग्गु पसर हुथं भरो न
अर्थ ॥ विषय कषाई रूप होइ ॥ फेर मन के रोकवे करि
संयम धर्म है सो होइ है ॥ मूल ॥ संयम मुरु काय क
त्ते स रुन ॥ अर्थ ॥ महत्काय के शत पश्चरणा क
रवे कर संयम धर्म है सो होइ है ॥ मूल ॥ संयम परग
ह गह चाह रुन ॥ अर्थ ॥ वाह्याभ्यंतर परिग्रह रूप
पिसांचवे त्याग कर संयम धर्म है सो होइ है ॥
इंद्रिय संयम कहि अब प्राण संयम कहे हैं ॥ मूल
संयम त्रस थावर रं करो न ॥ अर्थ ॥ त्रस थावर जो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२१ धर्म विना एक घरी भी मत व्यतीत होहु ॥ मूल ॥
संयम विनु विहली जाइ आउ ॥ अर्थ ॥ संयम ध
र्म विना आमे मुष्यायषा है सो विफल है ॥ घत्ता ॥
मूल ॥ इति भव पर भव संयम सारा ॥ अर्थ ॥ इस
भव पर भव विषें संयम धर्म है सो भव्य जीवों को
शरण है ॥ मूल ॥ होजउ जिणसरणहे ॥ अर्थ ॥ भो
नि उ सो संयम धर्म सर्व जीवों को शरण होहु ॥ सो
धर्मोपि थं देशरूप आशीर्वादं श्री जिनेश्वर देव
जी कर कह्यो है ॥ अथ एवं वारे सो अतिशयवान सं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हु रुद्ध ॥ अर्थ ॥ जुइ संयम धर्म है सो सम्यग्दर्शन
को मुख्य करे है पो ये है ॥ मूल ॥ संयम तिसहु निरमो
रक पंथ ॥ सम्यक्‌दर्शन कर रहित संयम धर्म है सो अ
तिशय कर मोक्ष को मार्ग है ॥ मूल ॥ संयम विनु नर
भव सयल सुण्णु ॥ अर्थ ॥ संयम धर्म विना मनुष्य पद
है सो शून्य है निरर्थक है निष्फल है ॥ मूल ॥ संयम वि
नु दुगांय जि उ पवरा ॥ अर्थ ॥ संयम धर्म विना कुग
ति विषे जीव है ॥ सो सखेद खिन्न होइ ॥ भरे के है ॥
मूल ॥ संयमं विनु घडियं मइक्क जाउ ॥ अर्थ ॥ संयम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२२ अपनी शक्ति प्रमाण आकर कीजिये है॥ कैसो कहें तपो
धर्म॥ बाह्याभ्यंतर दोय प्रकार है॥ अभ्यंतर छह
प्रकार बाह्य कर॥ और ऐसो बारह प्रकार है॥ मूल॥
ॐ ह्रीं परम ब्रह्मणोऽत्तम तपो धर्मागाय नमः॥ अर्थ॥
ऐसे महान उत्तम तपो धर्म रूप अंग के निमित्त हमारो
नमस्कार होहु॥ मूल॥ नरभव पावें ऐगु तच्च मुरो
पिणु॥ अर्थ॥ मनुष्य भव पाइकर स्वपर वस्तु के स
जानकर॥ मूल॥ पंच पिपांचिं दिय समनु॥ अर्थ॥
मनसहित पांचों इन्द्रियन को वस करखेंच कर॥ मूल॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यम धर्म जिनेश्वर देव जू कहो है॥ ऐसो अर्थ को

जिये॥ मूल॥ दुगाइस सोमन स्वर किरण॥ अर्थ

फेर संयम धर्म है॥ दुर्गति रूप सरोवर के सोषवे

को सूर्य समान है॥ मूल॥ जेन भवारि बिहु मुह

निउ॥ अर्थ॥ जा संयम धर्म कर महां विष म रोभ

यानक संसार वैरी है सो हनो जाइ है॥ इनिये है॥ मू

ल श्लोक॥ द्वादशं विविधं चैव बाह्याभ्यंतर भेद

त॥ स्वयं सकमभारो म क्रियते धर्मवेदभिः॥१॥

अर्थ॥ धर्म के जानन वाले सत्पुरुषों कर तप है सो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२३ नरके परिग्रह हैं॥१४॥ खेती करवो॥ घर॥ रूपो
सोनों॥ चौपद॥ बैल॥ घोड़ा॥ आदि धान्य नाज॥
दासी॥ दास॥१॥ अरगजा॥ सुगंध॥ वस्त्र॥ बासन॥१
ए बाह्य परिग्रह॥१॥ इस भांत जो बाह्य अभ्यंतर॥
चौवीस प्रकार परिग्रह छोड़िये॥ सो तप धर्म कहि
ये॥ मूल॥ तंतउजाहिं मयणु जिखंडिज्जइ॥ अर्थ॥
जहां काम को खंडिये जीतिये सो तप धर्म कहिये
॥ मूल॥ तंत उजहिं गिरिकंदर निवासइ॥ अर्थ॥
जहां गिरिकंदरा विषैं अतिशय कर॥ अथवा प्रवे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निवे उपचंड विसं गई धंडुवि ॥ अर्थ ॥ संसार भोग
शरीर सेती उदास भावरूप निर्वेद धर्म कर मंडित सहि
त होय सो भाय मान होयकर ॥ बाह्य अभ्यंतर चौवी
स प्रकार परिग्रह छोड़कर ॥ मूल ॥ तउ किज्जइं उजा
ए विवणु ॥ अर्थ ॥ बन विषें जाइ कर तप धर्म है सो
कीजिये ॥ मूल ॥ तंत उजह परिग्रह जं छंडिज्जई ॥
अर्थ ॥ राग ॥ १ ॥ द्वेष ॥ २ ॥ वेद भाव ॥ १ ॥ मिथ्याभाव
क्रोध मान ॥ १ ॥ माया ॥ १ ॥ लोभ ॥ १ ॥ हास्य ॥ रति ॥
अरति ॥ शोक ॥ भय ॥ जुगुप्सा ॥ १ ॥ ये चौदह आभ्यं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२४ नंत उ छस मिदि पर पालनु ॥ अर्थ ॥ जा विषे पांच
समित भले प्रकार पालिये सो तप धर्म कहिये ॥ मूल ॥
तंत उ गुप्ति ति यहि निहालगु ॥ अर्थ ॥ तहां तीनों गुप्त
ते चलै नहीं नीके पालिये सो तप धर्म कहिये ॥ मूल ॥
तंत उ जह अथै पर बुझई ॥ अर्थ ॥ जहां निजात्मा को
वा पर को स्वरूप जानो सो तप धर्म कहिये ॥ मूल ॥ तंत
उ जिह. भउ माया जिउ झइ ॥ अर्थ ॥ जहां संसार विषे
संसार तें उदास होई ॥ औरं मान कषाय छोड़िये ॥ सो
तपधर्म कहिये ॥ मूल ॥ तंत उ जह कम्म हगुन विज्झहे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शकर वसिए॥ तिष्ठियें सो तपधर्म कहिये॥ मूल॥
तंत उजिहि उपसर्ग सहिज्जइ॥ अर्थ॥ जहां उपसर्ग
को सहिये सो तपधर्म को कहिये॥ मूल॥ तंत उजह
राग्या उजिनिज्जई॥ अर्थ॥ जहां राग दोष मोहादिक
को जीतिए॥ तंत कहिये सो तउ कहिये तपधर्म क
हिये है॥ मूल॥ तंत उजहि भिर कहिये भुंजिज्जइ॥
अर्थ॥ तहां जैन आम्नायकर सहित योग्य परघर वि
षें भिक्षा कर आहार के समै विधि पूर्वक भोजन की
जिये॥ आहार कीजिये सो तपधर्म कहिये॥ मूल॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२५ है सो भले प्रकार प्राप्त होइ है ॥ मूल ॥ बारह विहिन्न
व वरु ॥ अर्थ ॥ बारह प्रकार श्रेष्ठ तप है ॥ मूल ॥ सो
दुगाइय इहलु ॥ अर्थ ॥ दुर्गतिके नरक तिर्यंच गति
के मार्गकों रोके है रहे हैं ॥ मूल ॥ तं पुज्जिजइ थिरमरा
न ॥ अर्थ ॥ तिस तप धर्मको स्थिर मन कर पूजिये ॥
मूल ॥ मच्छर मउ छंडवि करु नाई विदंडवि ॥ अर्थ
ईर्षा भाव है ताह छोड़कर इंद्री हैं तिन्है वशीभूत
कर ॥ मूल ॥ तंपि धरिज्जइ गंवर वेरा ॥ अर्थ ॥ ऐसो
महान तपधर्म है ताइ अति आदरकर धरिये ॥ मू

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥अर्थ॥ जहां कर्म समूह को खिरबौ गिनबौ होइ सोत
प धर्म कहिये॥मूल॥ नंत उज्जह सुर भनपया सहि॥अ
र्थ॥ जहां देव हैं ते भक्ति कर तपधान पुरषकी भक्त पूर्व
क जहां देव समूह हैं ते सेवा करें॥ सो तप धर्म कहिये
॥मूल॥ पव यरा कु भावि यराहि पवासाइ॥अर्थ॥ ज
हां भव्य समूह को शास्त्र अर्थ कहिये सो तप धर्म
कहिये॥मूल॥ जेरा तवे केवल उपज्जइ॥अर्थ॥ जात
पके प्रभाव कर केवलज्ञान है॥मूल॥ सासइ सुरकोन
च संपज्जइ॥अर्थ॥ और जातप कर सास्वंतौ सु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२६ ग धर्म अंगके निमित्त हमारो नमस्कार है सो होहु
॥मूल॥ चाउवि धम्मं गो करहु अभंगो रिग यसती
र भनी रजारा हु॥अर्थ॥ भो भव्य जीव हो ते अप
नी मक्तकर भक्त पूर्वक अखंड भंग रहित त्याग
धर्म है॥मूल॥ ताह पतहं स पवित्त हा तव गुण
तयुतहं॥अर्थ॥ तप अरणाकर सहित अति पवि
त्र पात्र हैं तिनके निमित्त करो॥ उत्कृष्ट पात्र के
निमित्त दान है ताहि देहु॥ कैसो कहे त्याग धर्म॥
मूल॥ परिगई संवलतं मुंनहु॥अर्थ॥ भो भव्य है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ल॥ चतुर्विधायसंघायदानं चैव चतुर्विधं॥ दा
तव्यं सर्वदासद्भिः श्चिंतकैः पालोकिकौ॥१॥
अर्थ॥ यालौकिकैः चिंतकैः सद्भिः कहिये पर
भव सुधारवेके चिंतक सत्पुरुषहै॥ तिनकर चतु
र्विधायसंघाय कहिये॥ चार प्रकार दानहै सो सर्व
दा कहिये सर्वकाल विषैं एव कहिये निश्चयकर
दातव्य कहिये देनो योहै सो सर्वदा कहिये॥ सर्व
काल विषैं देनों योग्यहै॥ मूल॥ ॐ ह्रीं परब्रह्मणोउ
त्तिमत्यांग धर्मांगाय नमः॥ अर्थ॥ ऐसो महानत्या

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२७ र्भ करदान दीये तें उत्कृष्ट भोग भूम के सुख होहि है

॥मूल॥ चाउ विह ऊइ रिा द्धि जीव राय॥अर्थ॥ वि

नय पूर्वक दानसं त्याग धर्म है सो नित्य ही कीजियें

॥मूल॥ सुह वय णइ भासे विन परायं॥अर्थ॥ फेर

शुभ मिष्ट हित मिति वचन बोलतें संते अति नम्री भू

त होइ करवा उत्कृष्ट पात्र के निमित्त दान दीजिये॥मू

ल॥ अभय दान दिज्जइ॥ पहिला॥३॥अर्थ॥ प्रथ

म ही सर्वोत्कृष्ट तें सर्व तें जे हो॥ अभय दान है सो दी

जिये॥मूल॥ जिमना सय परभव दुयार३॥अर्थ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्कृष्ट पात्र के निमित्त दान देवे रूप त्याग धर्म है
ताहि परभव को खरची जानो ऐसो त्याग धर्म है
॥मूल॥ चाए आवागमनं हृदइ ॥अर्थ॥ त्याग
धर्म कर संसार विषैं भ्रमण रूप आवागमन है
सो दूर हो दूर होए है ॥मूल॥ चाए निम्मल कित्तय
विदइ ॥अर्थ॥ त्याग धर्म कर निर्मल कीर्त्ति है ॥मूल॥
चाएं वइरय पणा मया राँ ॥अर्थ॥ त्याग धर्म कर
वैरी होंते पाइन परे है ॥ अंति नम्री भूत होहि है ॥मूल॥
चाएं भोह भूम मुह चाइंय ॥अर्थ॥ फेर त्याग ध

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२८ दानदेवाकर धन और नाना २ प्रकार अरिद्धि है ते प्रवर्त्ते
है॥ मूल॥ चउविह चाउ जिणह पविंदइ॥ अर्थ॥ इंभां
त चार प्रकार दानरूप चार प्रकार त्याग धर्म है सो प्रवर्त्ते
है॥ मूल॥ अह विहुदावियप्पह चाए॥ अर्थ॥ अथ
वा अशुभ विषय कषायरूप दुष्ट संकल्प विकल्प
परनाम के त्याग धर्म होइ है॥ मूल॥ चाउ विएहुसन
हु सम चाए॥ अर्थ॥ संक्षेपक थोरई सेक धनंकर क
हो त्याग धर्म नाहि जानो॥ घत्तामूल॥ दुयह दिंजइदी
न॥ अर्थ॥ कर्मकर पीडितं दुःखी दीन अनाथ मारिगी है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जा अभय दानके दियेते परभवके भयादिक दुः
ख हैं ते नास को प्राप्ति होहिहैं ॥ मूल ॥ सछ दान वि
ज्ज उपुराग किज्जइ ॥ अर्थ ॥ फेर दूसरो शास्त्र दान है
सो सुपात्र के निमित्त कीजिये ॥ मूल ॥ निर्मल नाम
जेन पाविज्जइ ॥ अर्थ ॥ जा शास्त्र के दान देवा कर नि
र्मल केवलज्ञान है ॥ मूल ॥ उसहु दिज्जइ रोय विना
सनु ॥ अर्थ ॥ जा औषधी दान है वाकर कदाच का
ल विषें व्याध के प्रकाश को हैय नहीं ॥ मूल ॥ आ
हारइं धन अरइ पवइं ॥ अर्थ ॥ चौथे आहार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रह भेदतः॥ तस्य संख्या प्रकर्तव्यात्त्वषारहित
चेतसा॥१॥ अर्थ॥ बाह्या भ्यंतर भेद तेजो परिग्रह
चौवीस प्रकारहै॥ ता परिग्रह की मर्यादा है सो सं
तोषी पुरुषकरनी योग्य है॥ मूल॥ ॐ ह्रीं परब्रह्मरो
उत्तम किंचिन्य धर्मांगाय नमः॥ अर्थ॥ ऐसे महान
आकिंचन धर्मांग केनि मित्त हमारो नमस्कार है सो
होहु॥ मूल॥ आकिंचन भावहु॥ अर्थ॥ आकिंचन
धर्म हैं ताहि भावो॥ ध्यानरूप करो कौनतरह ध्यान
में॥ ऐसो प्रश्न करो ताको उत्तर कहे हैं॥ मूल॥ अप्प उ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिन्हें करुना बुद्ध कर दान है सो दीजिये॥ मूल॥ वि
ज्जइ मारा॥ अर्थ॥ जिमुणा यणिा हं दर्शनज्ञान चा
रित्र तप॥ गुणा के धारक सुपात्रों के सन्मान की
जिये॥ और नित प्रसन्न नम्री भूत होइ॥ चार प्रका
र दान है सो दीजिये॥ मूल॥ इय भविय अभंगुहं स
णा चिंत्ति जइ मणा हं॥ अर्थ॥ निरंतर सदा काल जी
व हुया है सो भाइय सम्यग्दर्शन है सो अपने अं
तः करणा विषै॥ निरंतर चिंतवन कीजियें ध्याइ
ये॥ १॥ मूल श्लोक॥ चतुर्विंशति संख्यो तांयो पत्रि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३० सुहसंपराउ परम ख्याति दे उ विगय भउ ॥ अर्थ ॥
सुखकर परिपूर्ण है ॥ उत्कृष्ट है ॥ इंद्रीगम्य नहीं
है ॥ भयकर रहित है ॥ सात भय में कोई भय डर
नाहीं है ॥ जहां ऐसा आत्मस्वरूप ध्याइये सो नि
श्चय आकिंचन धर्म कहिये ॥ मूल ॥ आकिंचणु
चउसगहणीवि ॥ अर्थ ॥ बाह्य अभ्यंतर चौबी
स प्रकार परिग्रह को जे त्यागे सो आकिंचनु व्रत
कहिये ॥ मूल ॥ आकिंचन वड वियालि पभण म
त ॥ अर्थ ॥ शरीरादिक विषै ममत्व कौ जो त्याग सो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain, Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णा वउ ॥ अर्थ ॥ उस सर्व कर्म कलंक रहित निज
शुद्धात्मा है ताहि ध्यावो ॥ चिंतवन करो कैसा करे
॥ अर्थ ॥ आत्मा देउ ॥ मूल ॥ भिराहु ॥ अर्थ ॥ देह
तें न्यारो है ॥ मूल ॥ णाणा मउ ॥ अर्थ ॥ ज्ञान मयी
है ज्ञान शरीर है ॥ मूल ॥ निरुव मग यवणाउ ॥ अर्थ
ऐसो कोऊ उपमा नहीं जो आत्मा को दीजिये ॥
तातें उपमा कर रहित है ॥ फेर आत्मा है सो ॥ सुपेत
कारो, पियरो, हरो, लाल, नहीं है ॥ तातें पांच
वर्णों कर रहित है ॥ फेर कैसो कहे ॥ आत्मा ॥ मूल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३१ ल॥ आकिंचनु जे भवसु विरत्त॥ अर्थ॥ संसारसे
वंधी सुखसे तो जो मन विरक्त होइ नहीं लगे सो
आकिंचन धर्म जानना॥ मूल॥ तिरामित्त परिग
हु जह्य नह्य॥ अर्थ॥ जहां तीन मात्र परिग्रह
नहीं सो आकिंचन धर्म कहिये॥ मूल॥ मनरा
उ विहज्ज उत्तमय वह्य॥ अर्थ॥ मन को राग
तप रतबिषें कीजौ॥ अथवा जहां मान करना
भाव छोड़िये॥ मन शुद्ध होय तिश्यें सो आ
किंचन धर्म है॥ मूल॥ अप्पा परज्ञ छांवि यर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आकिंचनव्रतकहिये॥ मूल॥ आकिंचनु रयणा
तउपवित्त॥ अर्थ॥ रत्नत्रयको जो धारबो पवित्र
सो आकिंचनव्रत है॥ मूल॥ आकिंचणु आतवि
यइचित॥ पसरंतउ॥ इंदियवण विचित्त॥ अर्थ॥
इंद्रीरूपी नानाप्रकार चित्र विचित्र बन विषैं पसरते
दौरते चलते। चित्त को जो आकिंचन सो आकिं
चनव्रत कहिये॥ मूल॥ आकिंचनु देहहु रोकु
चतु॥ अर्थ॥ शरीर सति स्नेह को ममत्व को मोह
को जो छोड़नो। सो आकिंचनव्रत कहिये॥ मू

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३२ भोजनको अनिष्ट जानिये भोजन सुख दाई
नहीं ॥ ऐसो विचारिये सो आकिंचन धर्म
है ॥ मूल ॥ आकिंचन धर्म जो एम होई ॥
अर्थ ॥ इस भांत आकिंचन धर्म होइ है ॥ मू
ल ॥ तंभाइ ज्झइ निरुइ छलोइ ॥ अर्थ ॥
ऐसो महान आकिंचन धर्म है सो भव्य जी
वोंकर अतिशय कर इसलोक विषे ध्या
इये चिंतवन कीजिये ॥ मूल घत्ता ॥ एह उजि
यइाकउलद्ध महा बंइ तिछे मरासि बनथेर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शक्ति ॥ अर्थ ॥ जहां आतम स्वरूपकी अथवाप
र जीवकी स्वरूपकी विचारबे रूप शक्ति होइसो
आकिंचन धर्म है ॥ मूल ॥ परडिज्जइ जहांपर
मेडि भति ॥ अर्थ ॥ जहां पंच परमेष्ठी भक्ति प
गट कीजिये सो आकिंचन धर्म है ॥ मूल ॥ जहां
छांडिज्जइ संकराइदुट्ठ ॥ अर्थ ॥ जहां अशुभ
विषय कषाय रूप मन के दुष्ट संकल्प विक
ल्प छोड़िये सो आकिंचन धर्म है ॥ मूल ॥
भोजन बांछिजइ जांहि अनिट ॥ अर्थ ॥ जहां

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२३

पाल्नं शील्नं संतोष धारिभिः॥ भेदाउभेदेन
संयुक्तं सद्गुरो प्रसादतः॥ १॥ संतोषधारीपु
रुषोंकरि सर्वकाल विषें सद्गुरुके प्रसादतैं॥
भेदाभेदकरसंयुक्त शीलव्रत है ताह पालनो
योग्यहै॥ मूल॥ ॐह्रीं परम ब्रह्मरो उत्तिम ब्रह्म
चर्य धर्मांगाय नमः॥ अर्थ॥ ऐसो महान ब्रह्म
चर्य धर्मांगके निमित्त हमारो नमस्कार होहु
॥ मूल॥ ब्रह्म उडुडु रु धारिज्जइ वरु के डिज्ज
इ विसयासन रुं शुडु॥ अर्थ॥ ब्रह्मचर्य व्रत है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गया॥ अर्थ॥ इस आकिंचन धर्म के प्रभाव
कर॥ अपने शुद्ध आत्मीक स्वरूप को प्राप्त हो
इकर॥ तीर्थंकर देवाधिदेव हैते॥ शिव नगर को
प्राप्त भया॥ मूल॥ जे पुराण रिससारा मय णवि
यारा विंद णिज्जतेते रा सया॥ अर्थ॥ फिर परम पू
ज्य श्रेष्ठ जे ऋषीस्वर भये और होइगे और अ
ब होते सर्व ऋषीस्वर जिन मुद्रा धारकर तिस
आकिंचनु धर्म कर संहिता होइ॥ आकिंचन व्रतधा
रहीके वंदनीक भये जगत्पूज्य भये॥ नवधा सर्वदा ॥मूल॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मि विषैं काम उपजे है ॥ तिस कामकर पीडित हुओ
संतो कार मूर्ष मारी है ॥ अकार्य निंद नीक कार्य
करै है ॥ मूल ॥ तिंय हं सरीर इ निंदई सेवई ॥ मूल ॥ रीा
य पररा रिरा मढइ वेइय ॥ अर्थ ॥ स्त्रिया को निंद
नीक महां ॥ असुच शरीर को सेवै है ॥ काम कर अति
विहूल आतुर कार्य होयकर निज स्त्री और पर
स्त्री को नहीं जाने है ॥ मूल ॥ इयजाणो विणू मनु
वय काय ॥ अर्थ ॥ वंभ्व चेरु पातइ अनुरांए
॥ अर्थ ॥ इस भांत नरक दुख को जान मन वचन का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सो अति दुखों कर धरो जाइहै ॥ इस जगत पूज्य
ब्रह्म श्रेष्ट ब्रह्म चर्य व्रत को धारिये ॥ और विषय
कषायरूप आशा वांछा है सो अतिशय करि छो
ड़िये ॥ तिय सुरकपरत उमारीा कर मत उतंजी वम्ब
हत्थे हुथिर ॥ अर्थ ॥ स्त्रियों के सुष विषे रक्त आसक्त
मदोन्मत्त मनहाथी है ताहि ज्ञानरूपी अंकुश कर व
शीभूत कर परम उत्तम ब्रह्म चर्य व्रत है ताहि अत्यं
त थिर करो ॥ मूल ॥ चित्त भूमि मयरा जिउ प्पज्जइ
॥ मूल ॥ तेरा जपीडिउ करं अज्जई ॥ अर्थ ॥ चित्तभू

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३५ ॥जिने इश्वर देव जू कर विफल निफल के है हैं ॥ मूल
बाहिर पर सिव दिय सुहर पहु ॥ मूल ॥ परम बंभ्धं
तर पेर कहु ॥ अर्थ ॥ ब्राह्य स्पर्शन इंद्री के सुख को
छोड़ो ॥ और अपने अंतःकरन विषे अनंत द
र्शन ज्ञान सुख वीर्य मय निज आत्म रूप परब्रह्म
चर्य हेता हि ॥ एकाग्र दृष्टि कर दे षो अवलोक
न करो ॥ भो परम ब्रह्म चर्य के धारक पुरुषोत्तम
हो ॥ मूल ॥ ए नव वारो लब्भइ सि बहत्तू ॥ मूल ॥
इमर पथ तहु भिराइ विनय सारू ॥ अर्थ ॥ इसन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

य कर भो भव्य जीव हो तुम जे होते बड़ी प्रीति अ
नुराग कर ब्रह्म चर्य उत्तम रत्न है ताहि पालहु ॥
मूल ॥ एव पयार इंद्रिय सुह यारउ ॥ नम्वे विगु
वउ तउ जि असारउ ॥ अर्थ ॥ नव प्रकार स्त्री संबंधी सुख को
त्याग और व्रत तप को पालना सो और सर्व पुण्य
किया है ते ब्रह्म चर्य व्रत विना असार है अरु निः
फल है ॥ मूल ॥ ब्रह्मचर्य विनु काय कलेसइ ॥
मूल ॥ विफल सफल भो सि यहि जिरा सई ॥ अ
र्थ ॥ ब्रह्मचर्य व्रत विना संफल काय क्लेश है ते भो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३८ पूर्वक अंग और मस्तक नवाइ नमस्कार कीजिये है
फेर अतिशयकार हंस कालिक धर्म है सो पालिये
॥मूल॥ भोखेमसीह सुयभव्व विनय अुय॥मूल॥
होलीवम्बइहकारइपिर॥अर्थ॥ भोषेम सिंह सत
पुत्र भोभव्य भो विनय संयुक्त भो हो लि ऐसे नाम
धारिक पुरुषोत्तम तुम जु हो सो जुह उत्तम भवच
ये व्रत जु है ताहि अति दुर्लभ इस मनुष्य जन्म वि
षें। अत्यंताधिकरों। अतिगाढो पालो॥मूल॥ इ
य काउ न निज्जारं॥मूल॥ जे हरांत भव पंजरं॥अ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ववाड सहित सील व्रत पाले ॥ शिव मंदिर मो
न मंदिर है ॥ सो ब्रह्म चारी पुरुषोत्तमो करपाइ
ये है ॥ इस प्रकार इस लक्षणीक जयमाला के
कर्त्ता अति विनयवान् स्पष्ट है सो तुम विनयवा
न सत्पुरुष हो तिनको धर्मोपदेश रूप वचन कहे
है ॥ घत्ता मूलः जिणणाहु मणि जइ मुणि पण
विजई ॥ मूल ॥ इलर कणु पालि जइ ॥ अर्थ ॥
जिन नाथ जो है तिन्हें पूजिये ॥ निग्रंथ मुनि मह
राजों के मन वचन कायं कर नमोस्तु ऐसे विध

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३७ मूल॥ रव मरव माउ॥ तुंगयदेहउ॥ मूल॥ मद्दव पल्ल
व अज्जवसाहउ॥ अर्थ॥ कैसो कहे धर्म रूपी रत्न क्षमा
कीजें पांके सो है॥ उचौ शरीर जाकोइ ऐसो है॥ फेर कै
सो कहे॥ धर्म रत्न मार्दव धर्म रूपी पल्लव है॥ कूपली
है जाके॥ ऐसो है॥ आर्जव धर्म रूपी बडी २ साखा है
॥ बड़े २ डाली है जाके ऐसो है॥ मूल॥ सच्च सउच्च मूल
सयमद्दलु॥ मूल॥ दुविह महा तवनव कुसुमा वल्ल
॥ अर्थ॥ फेर कैसा है धर्म रत्न सत्य धर्म और शौच
धर्म है मूल जाको॥ ऐसा है॥ फेर इंद्री संयम और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

र्थ॥ इस भांत कर्मों की निर्जरा कर कर्म गालकर
और जे पुरुषोत्तम मनुष्य जन्म विषें संसार
रूपी पिंजरा है ताहि हने है तोरे है॥ मूल॥ रोगीरो
यं अजरामरं॥ मूल॥ ते लहंति सोरक्कयरं॥ अर्थ॥
ते पुरुषोत्तम रोग रहित उत्कृष्ट सुख है ताहि पा
वे है॥ मूल॥ जेरा मोरकफलं तं पावि ज्जइ॥ अर्थ॥
जो धर्म रत्न कर सो मोक्ष फल पाइये है॥ मूल॥
सो धम्मं गिउ एह उगीरि जई॥ अर्थ॥ सो धर्म ग्र
हियं धर्म रत्न सुभांत उगईए॥ उपजाइए॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३८ पेयरसुहयफलु ॥ अर्थ ॥ देवेंद्र नरेंद्र खेचरेंद्र संबंधी
सुखरूप महां मीठे फल अति सुंदर लगे हैं ॥ फलो केसे
के राजा के ऐसो कहे ॥ उत्तिम क्षमासु धर्म रूपी वृक्ष ॥
मूल ॥ दीन नाह दीहस मारा गाह ॥ अर्थ ॥ दीन अनाथ
बाधनहीं नबाधने श्वरी उपर किस है । निरोबर फलके
वीरूपसमा तुल्य अनुग्रह कृपा भाव जाकर ऐसो है ॥
पूर्वोक्ति धर्म रत्न सुध सोभत नमित्त परिगाहु । सुद्ध
समता परनाम रूप शरीर मात्र परिग्रह जाके ऐसो धर्म
रत्न ॥ मूल ॥ बंभचेरत्ता याह सुहासिउ ॥ अर्थ ॥ ब्रह्म

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मारा संयम है सो मोटा पनो जाके ऐसो है॥ फेर कैसो
के है धर्मरत्न॥ बाह्य वा भ्यंतर बारह भेद सहित होय
प्रकार तप रूपी है॥ पुष्पों की पंक्ति जाके ऐसा है धर्म
रत्न॥ मूल॥ चउ विह चाउ पासरय पर मलु॥ अर्थ॥ चा
र प्रकार जो दान सोई फूल है पुष्पों की सुगंध जा विषें
ऐसो है धर्म रत्न॥ मूल॥ पीणीय भव्य लोय छप्पय
उलु॥ अर्थ॥ तिन पुष्पों की सुगंध कर पुष्ट करे है॥ भ
व्य लोक रूपी भ्रमर समूह कर कैसे है॥ कलकलाश-
ब्द समूह जा विषें ऐसो धर्म रत्न॥ मूल॥ सुरनरपर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३९ न भक्षारउकिज्जई॥ अर्थ॥ ध्यान अनुष्ठान ध्यान-
आचरणरूप थांहत्लोकी जे रक्षा कोवा जलसौ चवो
आसपास मोदेवारको जिये॥ मूल॥ मिथ्यामय कुरू
वेंसुराादिज्जई॥ अर्थ॥ कुदेव कुशास्त्र कुगुरु की
प्रीतरूपवासरीरसो आत्मा बुद्धि रूप मिथ्यात्वरूपो
मृगको हरिन को निकट आवने नहीं दीजिये॥ प्रवेश
नहीं करन दीजिये॥ मूल॥ शीलशरीरधराहिं सिंचिज्ज
इ॥ अर्थ॥ सीलरूप निर्मल नीर जलके धारों करसीं
चिये॥ मूल॥ एम पयत्तइं वढारिज्जइ॥ अर्थ॥ इसय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चर्येंद्रपसघन छायाको है ॥ सुं शुभ आश्रय जाके ऐ
सो है धर्मरत्न ॥ मूल ॥ रायहंस नियरे हि समासिउ
॥ अर्थ ॥ चक्रवर्त नारायण प्रति नारायण वलभद्र
मुकुटबंध राजा ओंके आदि दे बड़े २ राजा हंसो
कर लियो ॥ अतिनिकट आश्रय जाको ऐसो है धर्म
रत्न ॥ मूल ॥ यह उद्दम एक लिर कज्जइ ॥ अर्थ ॥ जु
हु धर्मरत्न है सो धर्मात्मा भव्य जीवोंकर लिखियें
जानिये ॥ मूल ॥ जीवदया बहुविध रखि ज्जइ ॥ अर्थ ॥
जीवोंकी दया है सो बहुप्रकार राखिये ॥ मूल ॥ ज्ञानदा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

४०॥ समिरइ॥ अर्थ॥ फेर शुद्ध धर्म रत्न है सो तीन जगत
वासी भव्य जीवोंको सो भायमान अति मीठे सदा
शाश्वतौ मुक्तरूपी फलको देइहै॥ इति श्री दशलक्ष
णजयमाल टीका संपूर्णसमाप्तं॥ सं॰ १९५२ मिती फा
गुन सुदी ९ शनिवार ह॰ नाथूराम जैनी॰ सागर

श्लोक ४७५

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भकरवाइ इस प्रकार करि उत्तम क्षमा रूपी सुंदर धर्म
रत्नको बढाइये ॥ धत्ताः॥ कोहानल चुक्कउ ॥ अर्थः॥
क्रोध रूपी अग्नि सेंती बचे तो होइ गुरुक्कउ ॥ अति ब
डो अति गरुव होइ ॥ मूलः॥ जाई रिसिंदहिं सिद्दइ ॥
अर्थः॥ ऋषीस्वर जे सर्व कैं ऋषीस्वर वीतराग अर्हंत
देव है ते इसि भांति कहते इस भांति कहे हैं ॥ मूलः॥ ज
गताईस्वकरों रु ॥ मूलः॥ धम्म महातरु ॥ अर्थः॥ जुह
धर्म रूपी महा श्रेष्ट रत्न है सो तीनों जगत वासी भव्य
जीवों कों सुरक को कथा वाला है ॥ मूलः॥ देइ फलाइ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi